B.A – part – III
Sub – Pol. Science
paper – VI
(Political Thought)

Topic — "चार्ल्स-लुई द मॉंटेस्क्यू"

(Charles – Louis de Montesquieu)

DR. Dhananjay Sen
Asst. Prof. Guest faculty / part time
Deptt. of Pol. Science
L. S. College, Muzaffarpur
M- 8210688019

जन्म :— जनवरी, 1689, ब्रेडो डी ला ब्रीडी (फ्रांस)

मृत्यु :— 10 फरवरी, 1755

व्यक्तित्व परिचय – जीवन एवं कृतियाँ :⟹

मॉन्टेस्क्यू सन् 1728 ई० में ऑस्ट्रिया, स्विट्जरलैण्ड, इटली, हालैण्ड, हंगरी आदि अनेक देशों का भ्रमण करके अपने ज्ञान को समृद्ध बनाया। उसने उक्त देशों के राजनीतिक इतिहास का अध्ययन प्रस्तुत करने के उपरान्त समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method) का मार्ग प्रशस्त किया। वह सन् 1729 से 1731 तक इंग्लैण्ड में रहा और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि राजनीतिक शक्तियों (Political powers) का विभाजन ही वहाँ की राजनीतिक प्रभुसत्ता का स्रोत है। अपने इंग्लैण्ड भ्रमण/यात्रा से लौटकर वह पुनः ब्रेडो-डी-ला ब्रीडी (फ्रांस) अर्थात् अपने जन्म स्थान में रहने लगा।

⟹ मॉण्टेस्क्यू फ्रांस की दुर्दशा देखकर काफी दुखी रहता था। वास्तविक तौर पर देखा जाए तो उसका आविर्भाव एक ऐसे समय में हुआ था

Important Works | Important Calls | Important Meetings

जब फ्रांसीसी जनता करों के बोझ से पिस रही थी। वहाँ की जनता के पास न तो पेट भरने को पूरा भोजन और न ही तन को ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र ही थे। राजा एवं उसके सामन्तों का जीवन ऐश्वर्य और विलासिता से परिपूर्ण था। जहाँ एक ओर कृषक वर्ग सामन्तों की दमनकारी नीति से तो दूसरी ओर मध्यम वर्ग करों के बोझ से पीड़ित था। मॉण्टेस्क्यू तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था का अन्त करके फ्रांस में एक सुव्यवस्थित शासन-प्रणाली की स्थापना करना चाहता था। अपने भ्रमण और इंग्लैण्ड के दो वर्षीय आवास से लौटने के पश्चात् उसने शासन-व्यवस्था के बारे में अपने विचारों को जनमता (जनता) के समक्ष प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने शासन-सत्ता के विकेन्द्रीकरण अथवा विभाजन का समर्थन करते हुए उसने विधियों की परिभाषा एवं उत्पत्ति, सरकार की प्रकृति एवं उसका वर्गीकरण, राजस्व, सैनिक व्यवस्था आदि विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रकट किये।

मॉन्टेस्क्यू की कृतियाँ

— (1) पर्शियन लेटर्स (Persian Letters) → 1721 ई०

— (2) रिफलेक्शन ऑन द कॉजेज ऑफ द ग्रेटनेस एण्ड डिक्लाइन ऑफ द रोमन्स (Reflection on the Causes of the greatness and decline of the Romans) → 1734 ई०

— (3) द स्प्रिट ऑफ लॉज (The Spirit of Laws) → 1748 ई०

⇒ सन् 1721 ई० में केवल 32 वर्ष की आयु में उसकी प्रथम कृति (Persian Letters) प्रकाशित हो चुकी थी जिसमें कुछ ऐसे कल्पित पत्रों का संग्रह था जिसके द्वारा फ्रांस के सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक जीवन की व्यंग्य आलोचना की गई थी। इसमें राज्य, राजा, चर्च एवं

March'17

Wk	S	M	T	W	T	F	S
09				1	2	3	4
10	5	6	7	8	9	10	11
11	12	13	14	15	16	17	18
12	19	20	21	22	23	24	25
13	26	27	28	29	30	31	

April'17

Wk	S	M	T	W	T	F	S
13	30						1
14	2	3	4	5	6	7	8
15	9	10	11	12	13	14	15
16	16	17	18	19	20	21	22
17	23	24	25	26	27	28	29

देश की अन्य संस्थाओं पर व्यंग्य करते गये थे और फ्रेंच समाज की मूर्खताओं तथा अन्धविश्वासों का मजाक उड़ाया गया था। फ्रांस की पीड़ित साधारण जनता मॉन्टेस्क्यू के इस चित्रण से अत्यन्त प्रभावित हुई।

⟹ सन् 1734 में मॉन्टेस्क्यू ने अपना ग्रंथ (Reflection on the Cause of the greatness and Decline of the Roman' प्रकाशित करा जिसमें उसने उन प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया जो विभिन्न देशों के इतिहासों के अध्ययन के कारण उस पर हुई थी। यह ग्रन्थ उसके दर्शन के स्वरूप एवं स्पष्ट तौर पर प्रस्तुत करता है इस ग्रंथ में उसका यह विश्वास झलकता है कि साधारण कारणों से घटनाओं का उदय होता है और ऐतिहासिक घटनाएं एवं प्रक्रियाएं संयोग से नहीं बल्कि कुछ निश्चित सिद्धान्तों द्वारा अनुशासित होती हैं।

⟹ मॉन्टेस्क्यू ने रोमन इतिहास का अध्ययन रोम के पतन के कारणों को समाज कर भविष्य के लिए सबक लेने की दृष्टि से किया था और इसलिए यह मानने में कोई अतिश्योक्ति प्रतीत नहीं होती कि उसके राजदर्शन के सामान्य स्वरूप को निर्धारित करने वाले प्रमुख तत्वों में रोमन इतिहास और ब्रिटिश संस्थाओं का स्थान अग्रणी था।

⟹ सन् 1748 में मान्टेस्क्यू का अमर ग्रंथ 'The spirit of Laws' प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ में उसने सरकार के भेद, विधि, आर्थिक एवं सैनिक व्यवस्था, सामाजिक परम्पराओं एवं नागरिक चरित्र, धार्मिक समस्याओं आदि पर अपने विचार प्रकट किये। 'द स्पिरिट ऑफ लॉज़'

⟹ मॉन्टेस्क्यू की प्रसिद्ध अमर कृति/ग्रंथ अठारहवीं शताब्दी के गद्य की सर्वश्रेष्ठ कृति मानी जाती है जो अपनी विषय सामग्री और शैली दोनों की दृष्टि से अद्वितीय है।

⟹ फैक्सो ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में 'द स्पिरिट ऑफ लॉज के बारे में कहा है कि यह राजनीति विज्ञान की सभी ग्रंथों में जो कभी भी लिखी

Important Works	Important Calls	Important Meetings

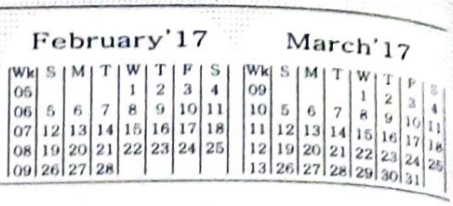

गई हो, सबसे अधिक पठनीय ग्रन्थ है।

⇒ इनिंग ने 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' ग्रंथ के बारे में स्पष्ट तौर कहा है कि इस पुस्तक का क्षेत्र इतना व्यापक है कि यह विशुद्ध राजनीति की बजाय समाजशास्त्र की पुस्तक बन गई है।

⇒ 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' 31 अध्यायों में विभक्त है। विचारों की दृष्टि से इसे छः भागों में विभाजित किया जा सकता है।

⇒ 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' के प्रथम भाग में कानून और तन्त्र का चित्रण प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम भाग → कानून और तन्त्र का चित्रण
द्वितीय भाग → राजस्व तथा सैनिक व्यवस्था पर विचार
तृतीय भाग → सामाजिक परिप्रेक्ष्यों की व्याख्या
चतुर्थ भाग → आर्थिक विषयों से सम्बन्धित तथ्यों पर विचार
पंचम भाग → धर्म सम्बन्धी समस्याओं पर विचार
षष्ठम् भाग → विभिन्न देशों के कानूनों की चर्चा।

Note → तृतीय भाग में किसी देश के नागरिकों के चरित्र निर्माण में वहाँ के भौगोलिक वातावरण के प्रभाव पर विचार किया गया है।

⇒ द स्पिरिट ऑफ लॉज के बारे में कहा जाता है कि यह ग्रंथ सभी प्रबुद्ध के पाठकों को चिन्तन की कुछ न कुछ सामग्री प्रदान अवश्य करता है। इसीलिए मान्टेस्क्यू का यह ग्रन्थ इतना लोकप्रिय हुआ कि दो वर्ष में ही इसके 22 संस्करण छपे और फ्रांस की विभिन्न भाषाओं में इसके इसके अनुवाद किये गये।

—x—

Important Works	Important Calls	Important Meetings